श्री गुरुपद रज परसि कर धर भगवान का ध्यान। शनि चालिसा रचूँ मैं निज मति के अनुमान।।

अति मलिन मतिहीन मैं सुमिरौं श्री शनि देव। कृपा दृष्टि राखहू प्रभु करूँ आपकी सेव।।

चौपाई

जय श्री शनिदेव महाराजा। जय कृष्णा गौरि सिर ताजा।।

रविसुत जय छाया के नन्दन। महाबली तुम असुर निकन्दन।।

पिंगल मन्द रौद्र शनि नामा। करहु भक्त के पूरण कामा।।

श्याम वरण है अंग तुम्हारा। वक्र दृष्टि तन क्रोध अपारा।।

क्रीट मुकुट कुण्डल छवि छाजै। गले मुक्तन की माल बिराजै।।

कर कुठार दुष्टन को मारा। चक्र त्रिशूल चतुर्भुज धारा।।

गिरि राई सम तुल्य करो तुम। तिनही के सिर छत्र धरो तुम।।

जो जन तुमपे ध्यान लगावै। मन वाछिंत फल आतुर पावै।।

जापर कृपा आपकी होई। जो फल चाहै मिलिहै सोई।।

जिस पर कोप कठिन तुम ताना। उसका फिर नहिं लगत ठिकाना।।

साँचे देव आप हो स्वामी। घट .घट वासी अन्तर्यामी।।

दशरथ नृप के ऊपर धाये। श्री रघुनायक विपिन पठाये।।

निश्चर हाथ सिया हरवाई। लक्ष्मण के उर शक्ति समाई।।

इतना त्रास राम को दीन्हा। नाश लंकपति कुल का कीन्हा।।

चेतक तुमने सबहि दिखाया। विक्रम भूप चोर बनवाया।।

उसने छोटा तुम्हे बताया। राज.पाट सब धूर मिलाया।।

हाथ.पैर तुम दिया कटाई। पाट तेलिया का हँकवाई।।

फिर सुमिरन तुमरो उन किया। दिये पैर कर खुश कर दिया।।

युगल ब्याल उसके करवाये। शोर नग्र सगरे में छाये।।

जो कोई तुमको बुरा बतावे। सो नर सुख सपनेहूँ नहिं पावे।।

दशा आपकी सब पर आवे। फल शुभ.अशुभ हाल दिखलावे।।

तीनहुँ लोक तुम्हें शिर नावें। ब्रह्मा विष्णु महेश मनावें।।

लीला अद् भुत नाथ तुम्हारी। निशदिन ध्यान धरें नर.नारी।।

कहँ तक तुम्हरी करूँ बड़ाई। लंक भस्म छन माहिं कराई।।

जिन सुमिरे मन अस फल चाखा। कहँ तक तर्क बढ़ाऊँ शाखा।।

दयालु होत ही करहु निहाला। टेढ़ि दृष्टि है कठिन कराला।।

नव वाहन हैं नाथ तुम्हारे। गर्दभ अश्व और गज प्यारे।।

मेष सिंह जम्बुक मग माना। काग मयूर हंस पहचाना।।

गर्दभ चढ़ि जब तुम आओ। मान भंग उसका करवाओ।।

चढ़ घोड़े तुम जब आओ। उस नर को धन लाभ कराओ।।

हाथी के वाहन सुख भारी। सर्व सिद्धि नर का रहे जारी।।

जो मेढ़ा के वाहन गाजौ। रोग मनुष्य के तन में साजौ।।

जम्बुक वाहन चढ़े पधारौ। तो नर से हो युद्ध करारौ।।

आओ सिंह चढ़े जेहि ऊपर। दुश्मन नर को रहे न भू पर।।

जिसको काग सवारी घेरौ। उसको आग काल मुख गेरौ।।

मोर चढ़े राशी जौ चीन्ही। चल सम्पति उसको बहु दीन्ही।।

हंस सवारी पर जब आवत। उस नर को आनन्द दिखावत।।

जै जै जै शनि देव दयालु। कृपा दास पर करहु कृपालु।।

यह दस बार पाठ जो करई। कटहि कष्ट सुख निशदिन रहई।।

छीतरमल शनि जू का चेरा। नगर हाथरस करहि बसेरा।।

दोहा

जय जय रवितनय प्रभु। हरहु सकल भ्रमशूल।।

जन की रक्षा कीजिए। सदा रहहु अनुकूल।।